क्षमा करने वाला बाग़

लौरीन थोम्पसन, चित्र : क्रिस्टी हेल

हिंदी : विदूषक

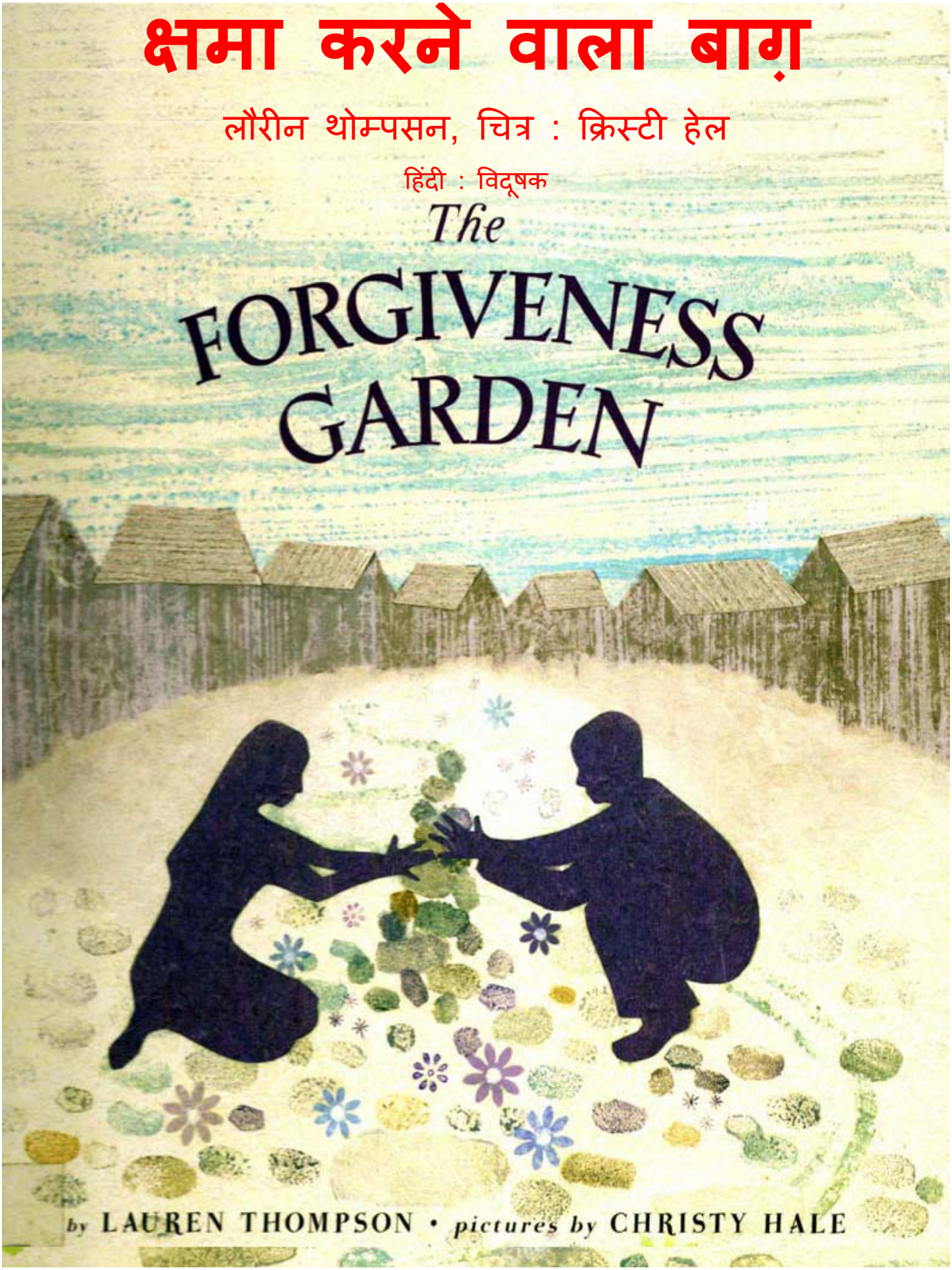

क्षमा करने वाला बाग़

लौरीन थोम्पसन, चित्र : क्रिस्टी हेल

हिंदी : विदूषक

The
FORGIVENESS
GARDEN

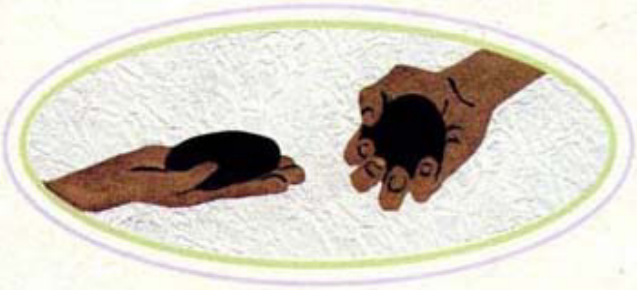

by LAUREN THOMPSON

pictures by CHRISTY HALE

नामों के बारे में एक नोट:

इस कहानी में सभी नाम संस्कृत भाषा से लिए गए हैं. संस्कृत एक प्राचीन भाषा है जिसमें हिन्दू, बौद्ध और अन्य धर्मों के ग्रन्थ लिखे गए थे. संस्कृत भाषा एशिया और यूरोप की कई भाषायों की जननी भी है.

वयम = “हम”

गमते = “उनका गाँव”

क्षमा = “माफ़ करना”

करुणा = “दयालुता”

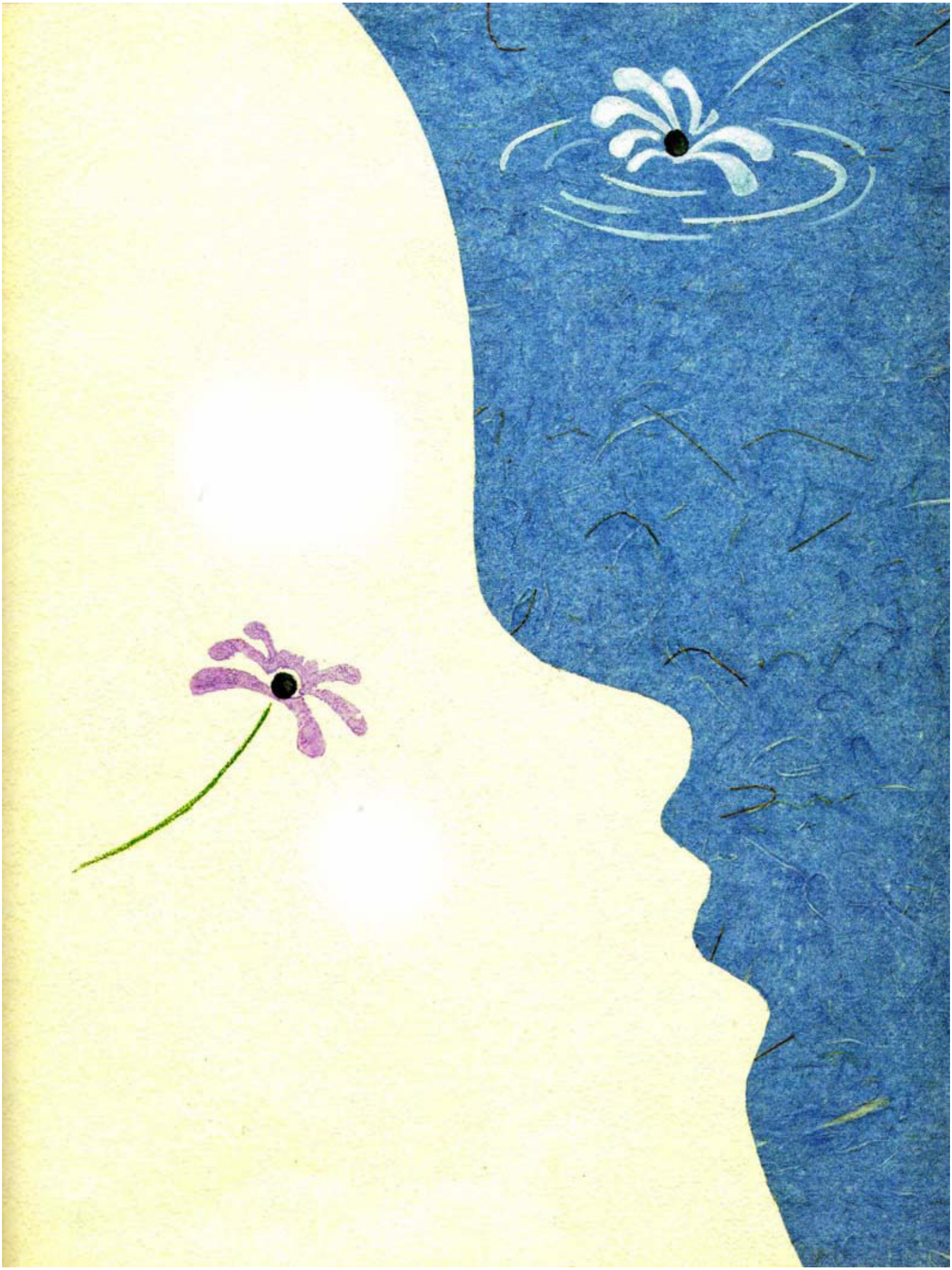

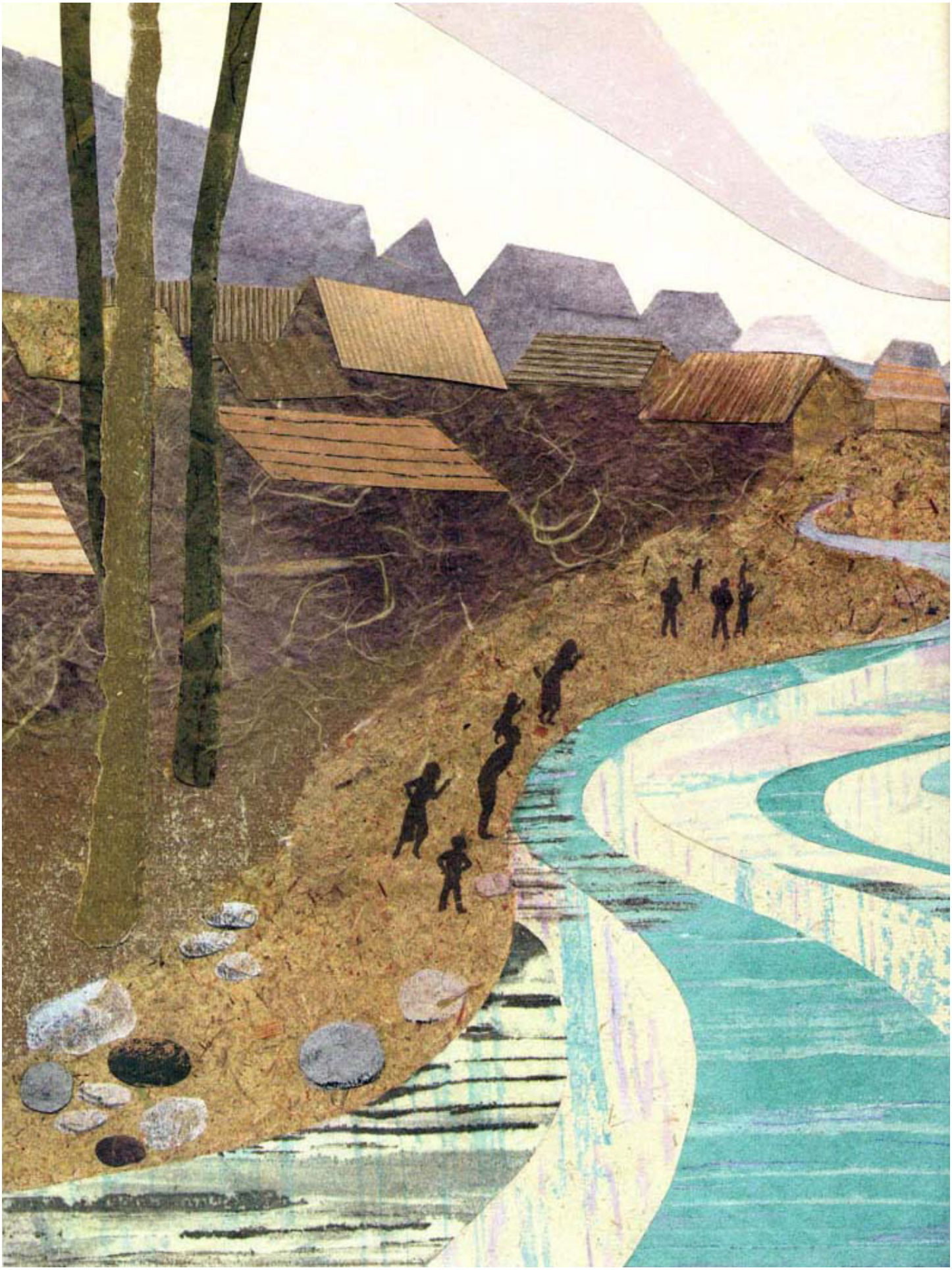

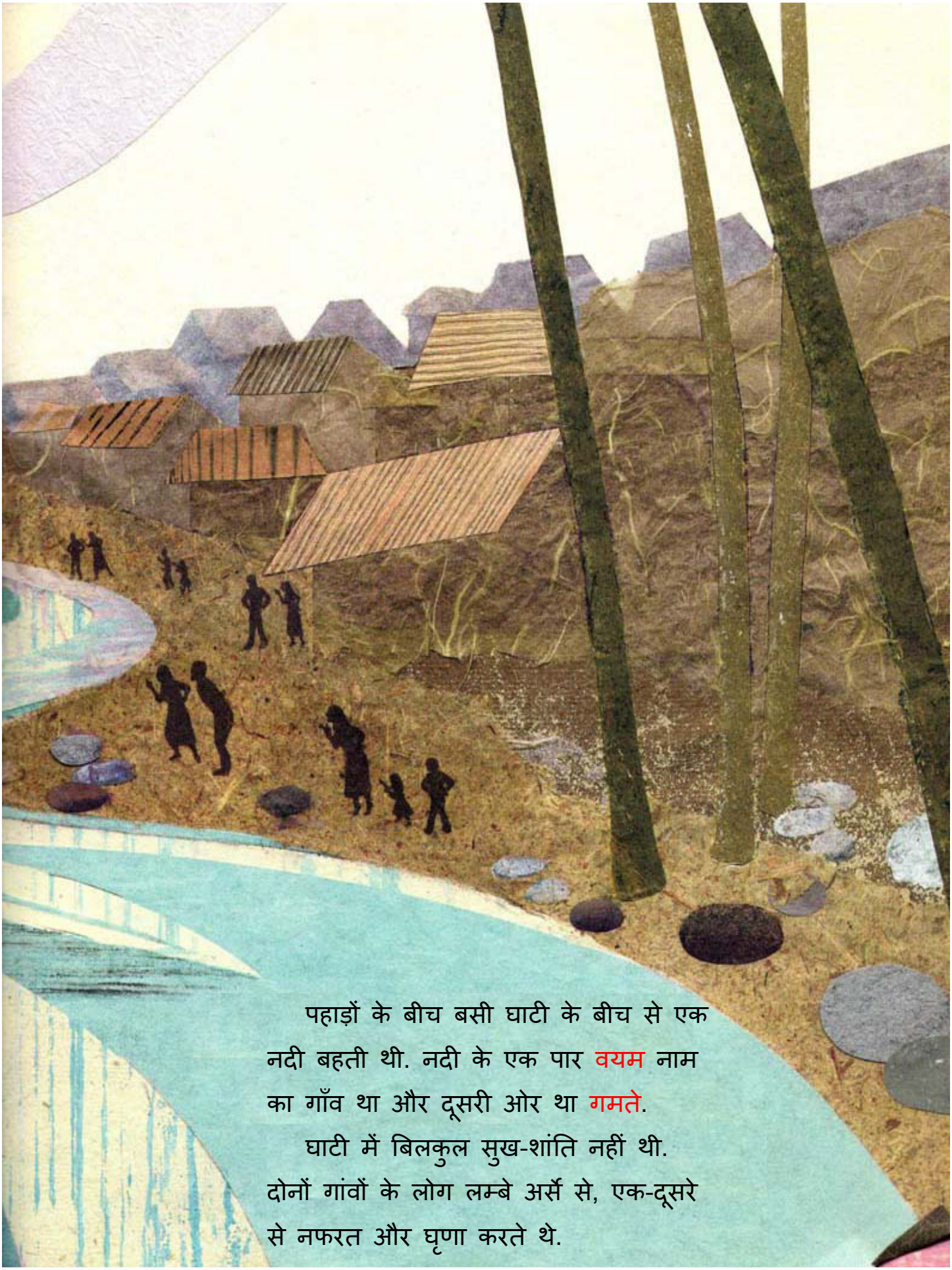

पहाड़ों के बीच बसी घाटी के बीच से एक नदी बहती थी. नदी के एक पार वयम नाम का गाँव था और दूसरी ओर था गमते.

घाटी में बिलकुल सुख-शांति नहीं थी. दोनों गांवों के लोग लम्बे अर्से से, एक-दूसरे से नफरत और घृणा करते थे.

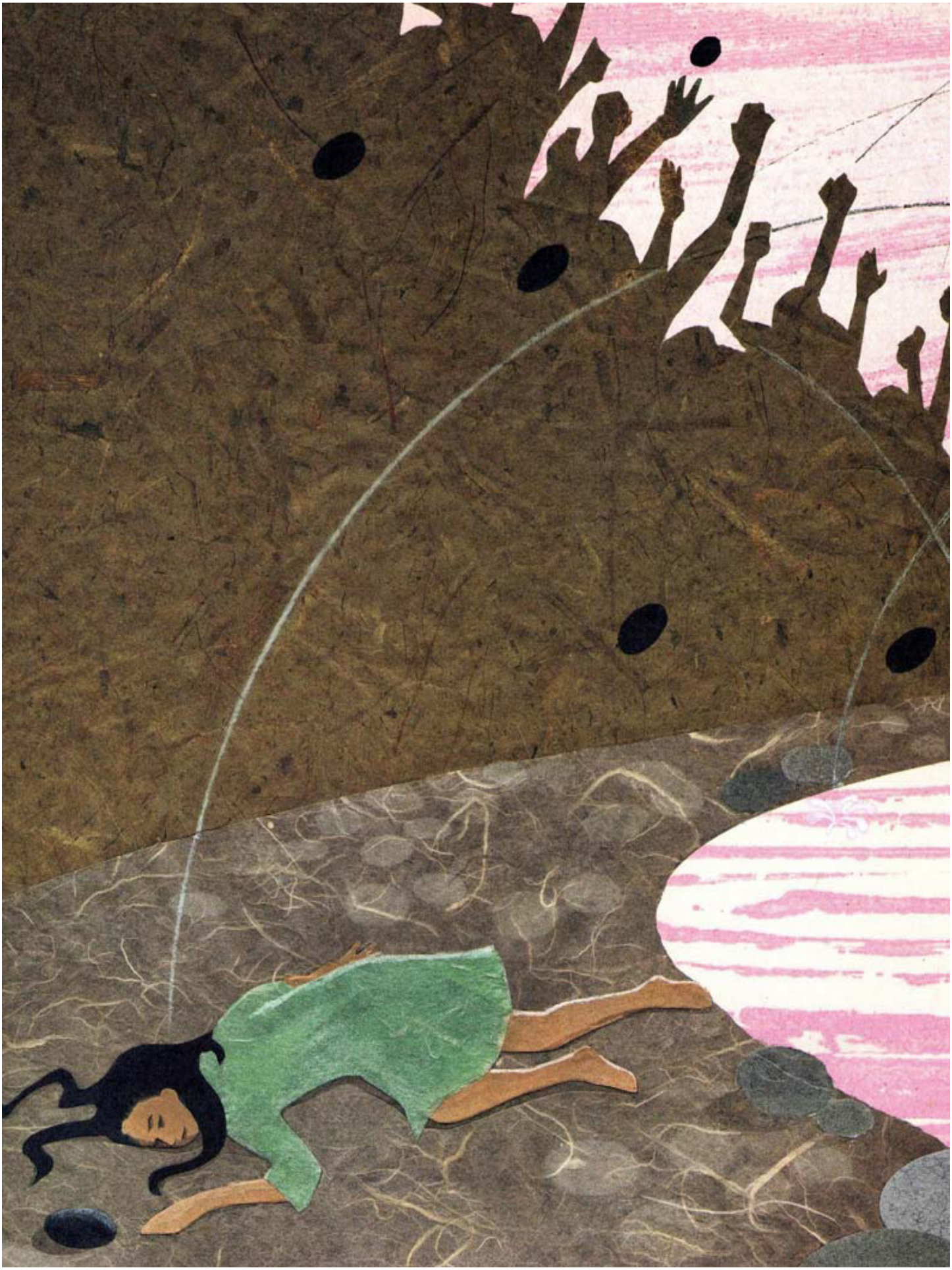

एक दिन एक नया बवाल खड़ा हो गया. दोनों गाँव, नदी के एक हिस्से पर अपनी कब्जियत ज़माने लगे. दोनों तरफ से पहले तो गाली-गलौज शुरू हुई और फिर पत्थरबाजी.

गमते गाँव के एक लड़के करुणा ने, एक बड़ा पत्थर उठाया और उसे नदी के दूसरी ओर फेंका.

वो पत्थर, वयम गाँव की एक लड़की - क्षमा के सिर पर जाकर लगा. क्षमा को बहुत चोट लगी और वो ज़मीन पर गिर गयी.

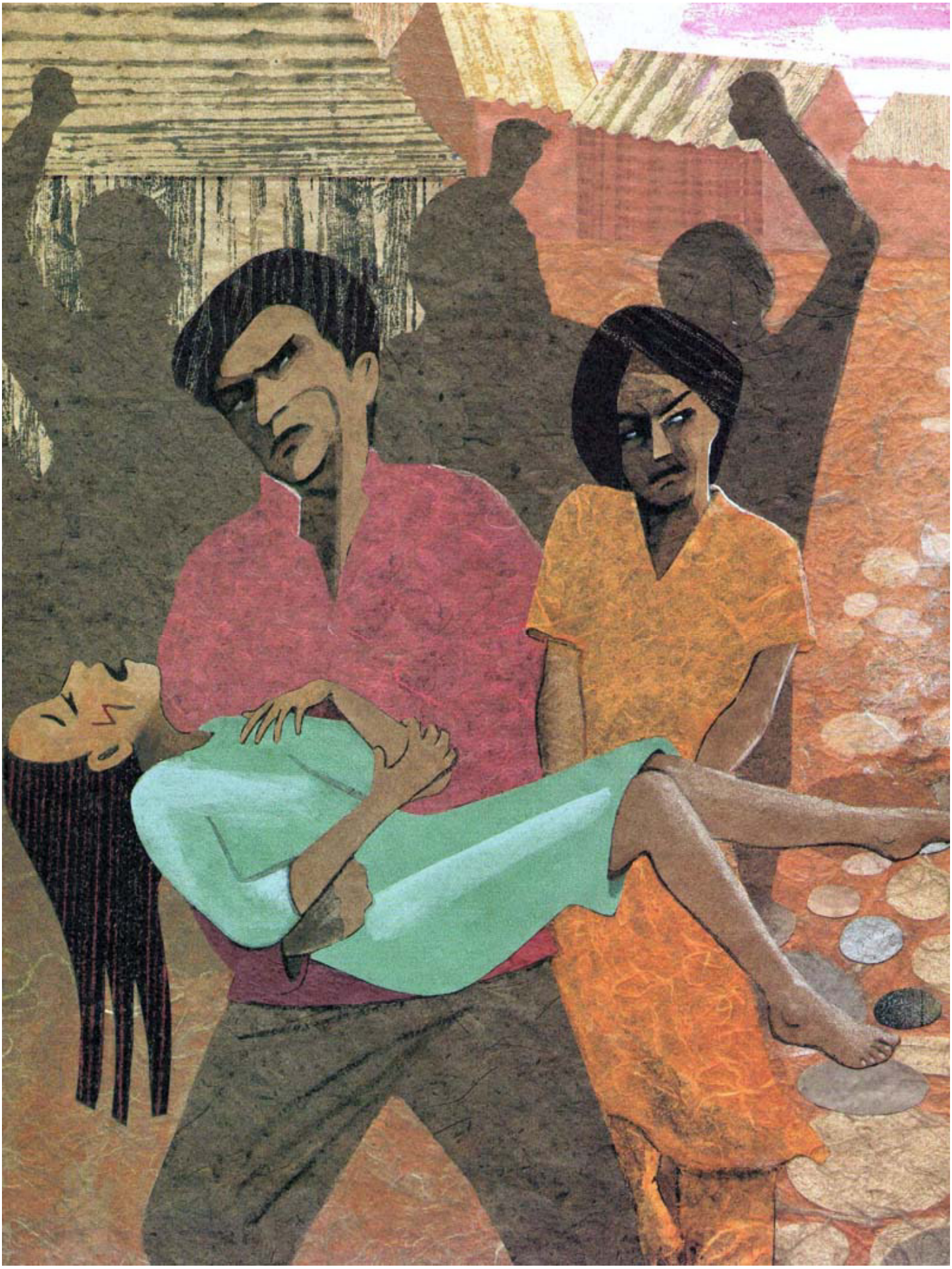

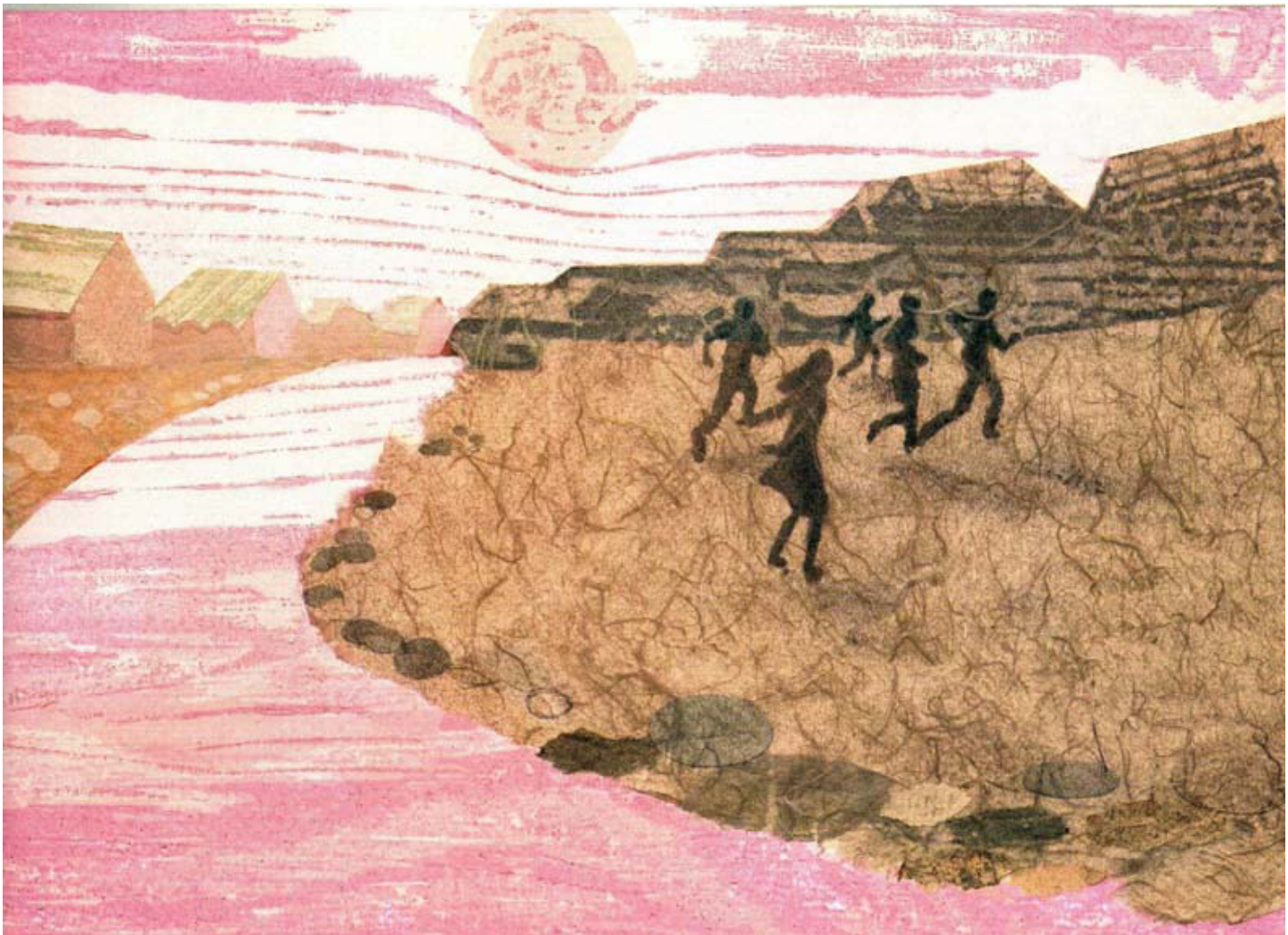

वयम गाँव के लोग, क्षमा के मदद के लिए दौड़े. दूसरी ओर गमते गाँव के लोग ख़ुशी से चिल्लाने लगे. फिर क्या था? वयम के लोगों ने, बदला लेने की ठानी. वो गुस्से से आग-बबूले हो गए. उन्हें डर भी लग रहा था. *क्या गमते के लोग हमेशा-हमेशा इसी तरह हमसे लड़ते रहेंगे?*

उन्होंने क्षमा को उठाया, और उसके साहस की तारीफ की. फिर वो गमते वालों से बदला लेने के लिए अपनी रणनीति बनाने लगे.
जैसे-जैसे दिन गुज़रे क्षमा के चोट ठीक हुई, और दर्द भी कम हुआ.
पर वयम के लोगों की गमते के निवासियों के प्रति नफरत बढ़ती ही गई.

दूसरी तरफ गमते के लोगों में भी बहुत गुस्सा था. वे भी डरे हुए थे. *क्या वयम के लोग हमेशा इसी तरह हमसे लड़ते रहेंगे?*

वो करुणा के पास खड़े होकर उसकी हिम्मत की प्रशंसा करने लगे. फिर वे भी वयम के खिलाफ अपनी सुरक्षा की रणनीति बनाने लगे. "क्या पत्थर मरकर मैंने वाकई बड़ी बहादुरी का काम किया?" करुणा ने मन में सोचा. पर वयम के लोगों के प्रति उसकी घृणा बढ़ती ही गई.

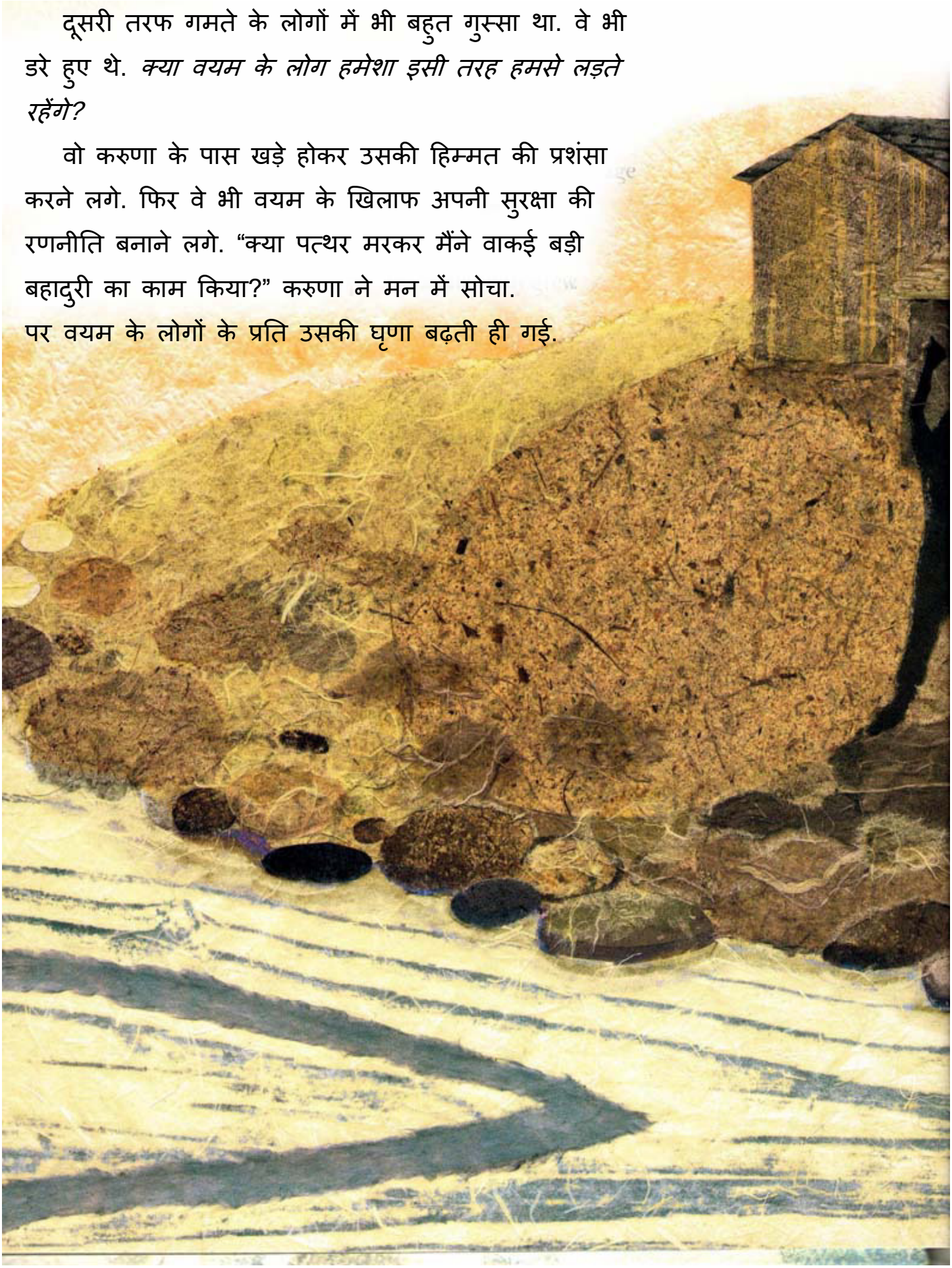

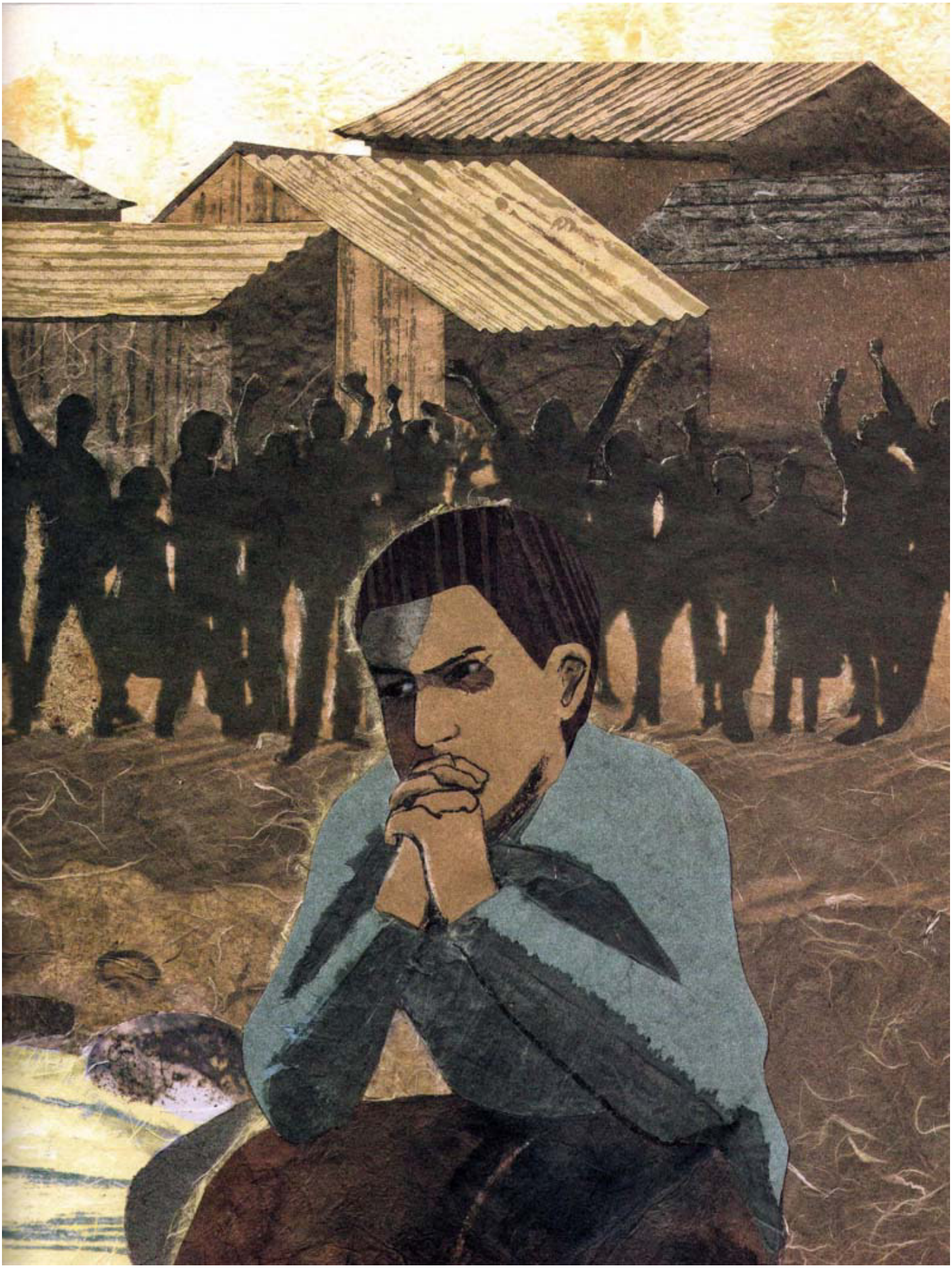

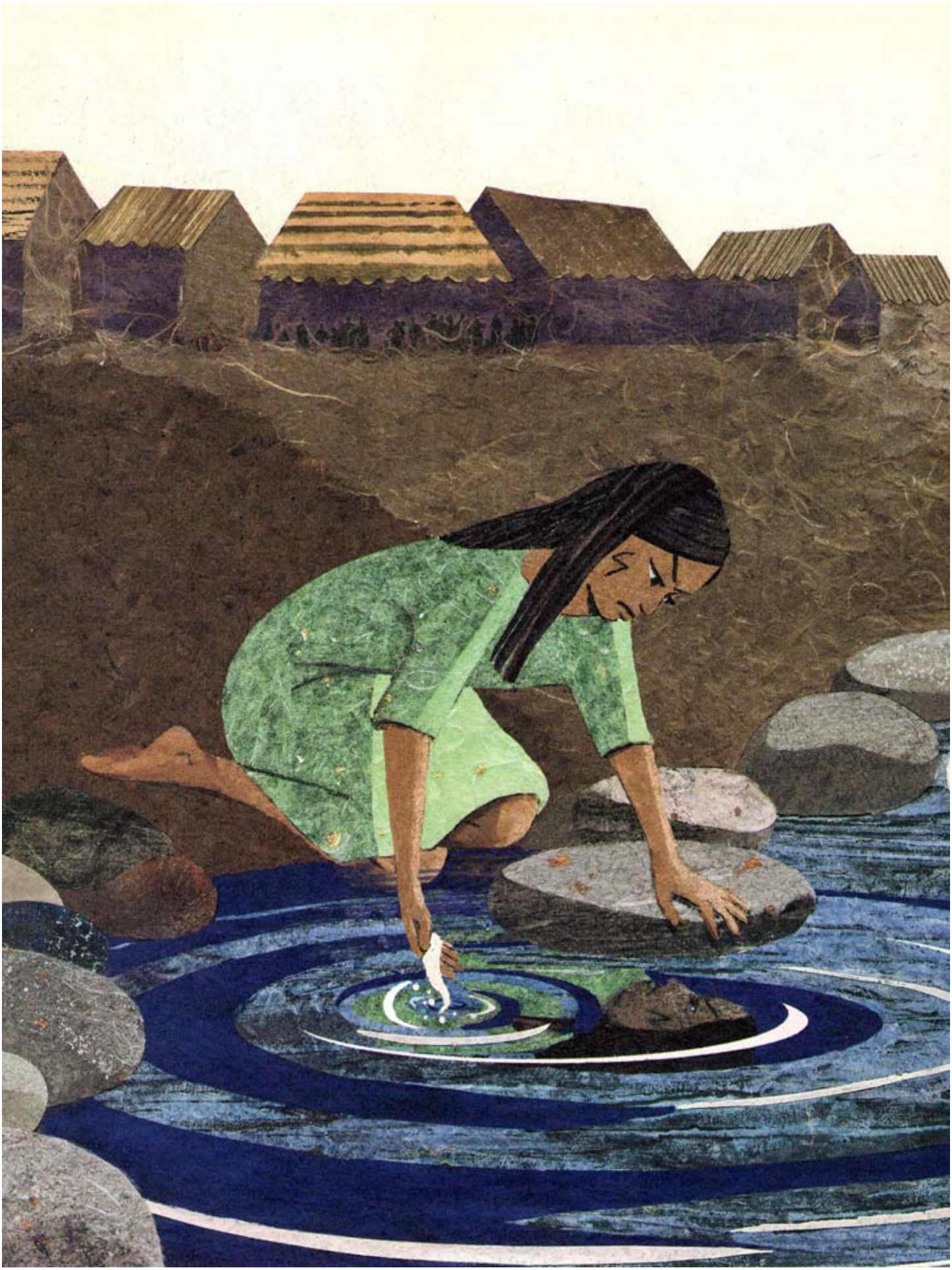

एक दिन क्षमा नदी के किनारे घूमकर अपने दिल के दर्द को कम करने की कोशिश कर रही थी. तभी वो एक शांत छोटे तालाब के पास रुकी. उसने झुककर तालाब से पानी पिया. झुकते समय उसे पानी में अपने सर पर लगी चोट दिखी. साथ में उसे पानी में अपना स्याह और मुरझाया हुआ चेहरा भी दिखाई दिया.

"मेरा क्या हाल हुआ है? मैं क्या बन गई हूँ?" क्षमा रोने लगी.

क्षमा बहुत देर तक रोती रही.

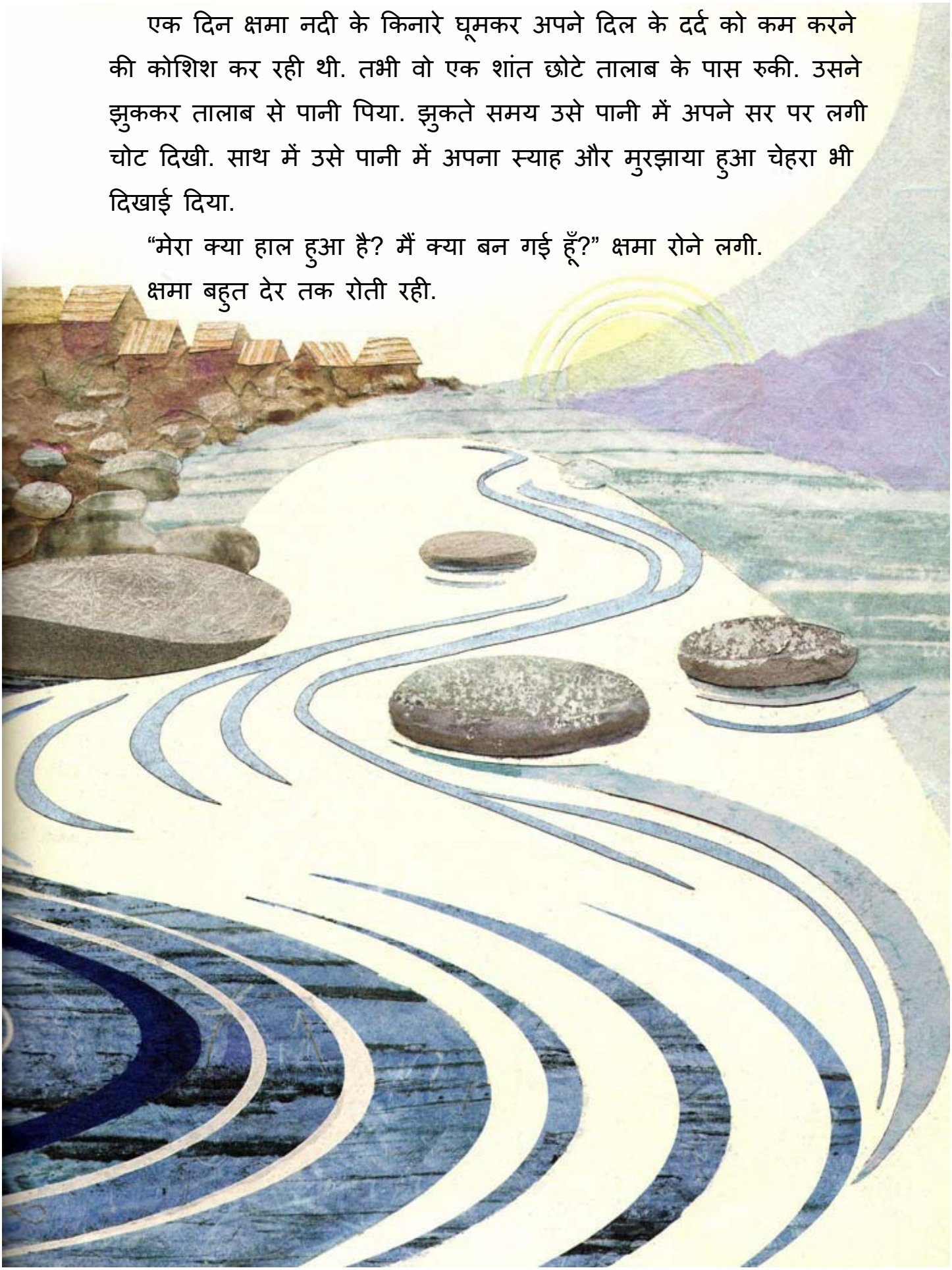

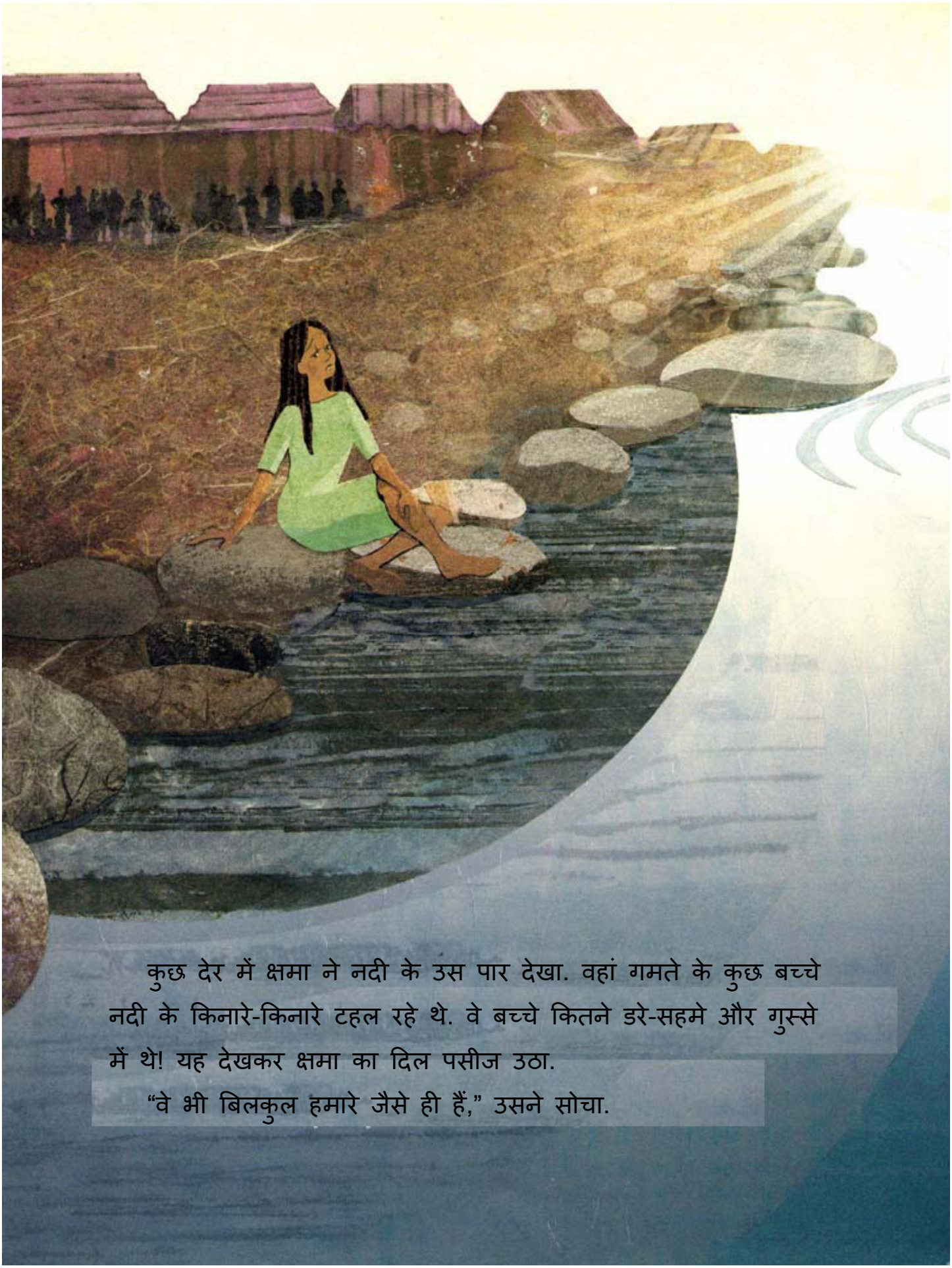

कुछ देर में क्षमा ने नदी के उस पार देखा. वहां गमते के कुछ बच्चे नदी के किनारे-किनारे टहल रहे थे. वे बच्चे कितने डरे-सहमे और गुस्से में थे! यह देखकर क्षमा का दिल पसीज उठा.

"वे भी बिलकुल हमारे जैसे ही हैं," उसने सोचा.

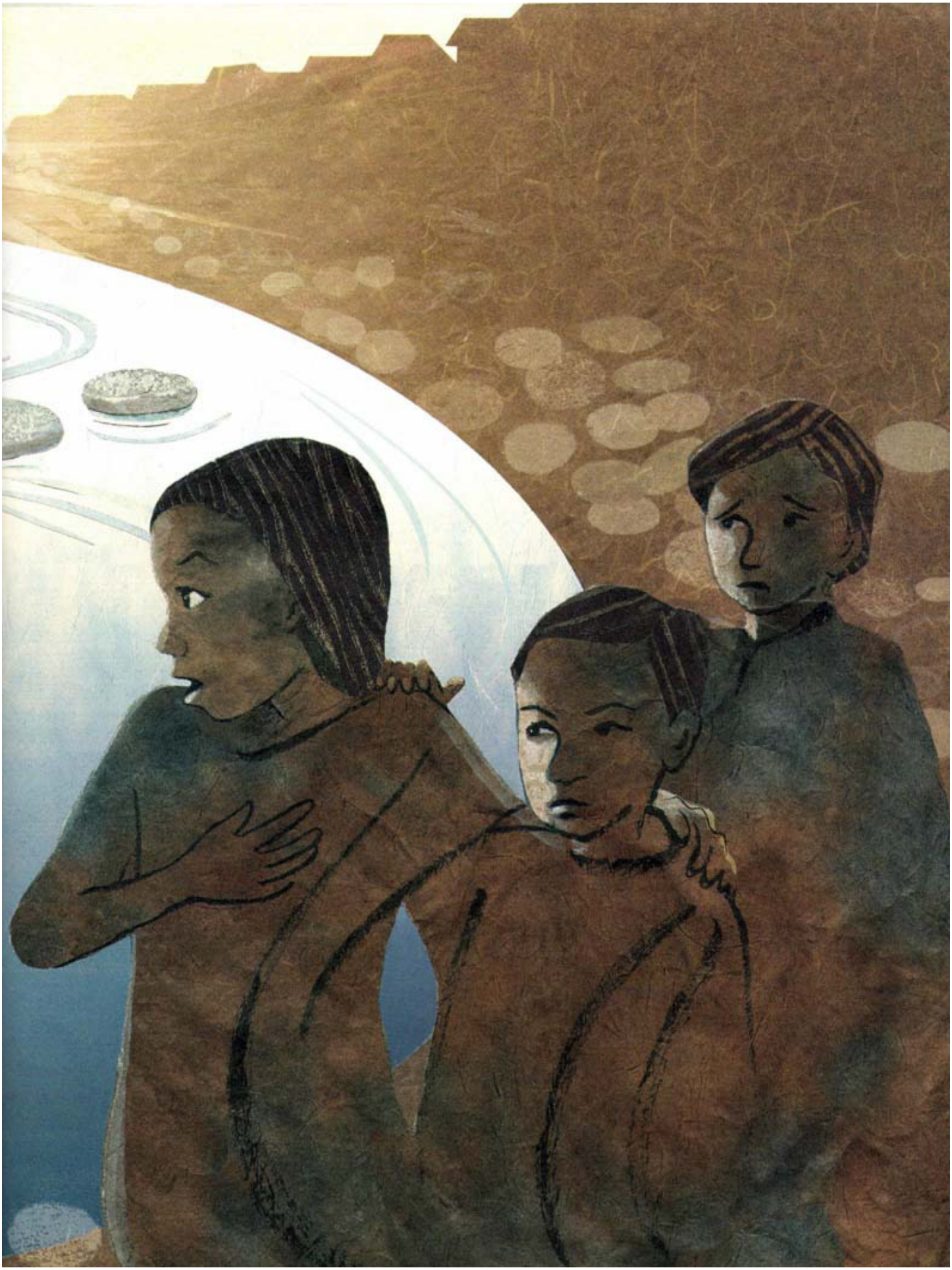

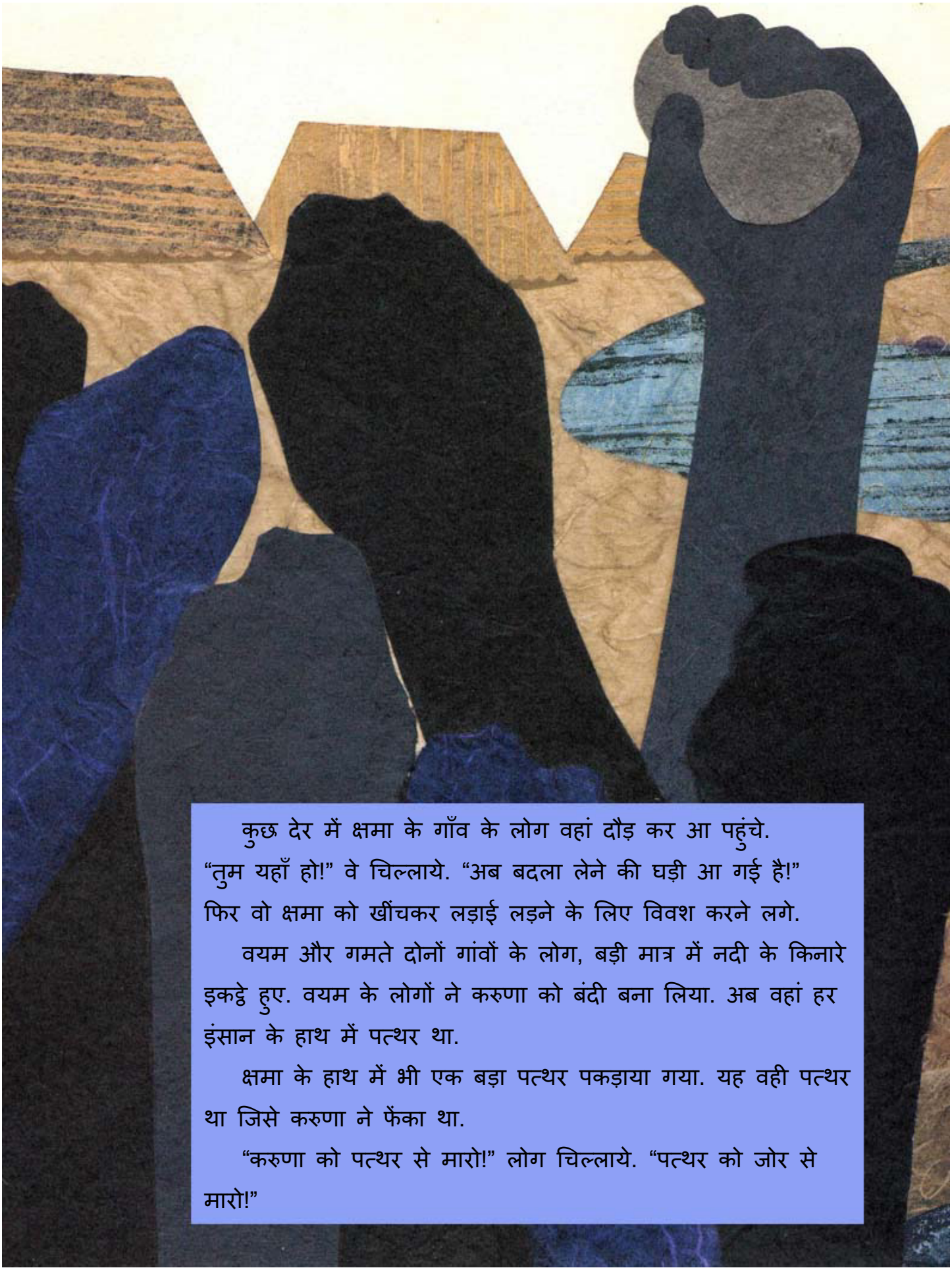

कुछ देर में क्षमा के गाँव के लोग वहां दौड़ कर आ पहुंचे. “तुम यहाँ हो!” वे चिल्लाये. “अब बदला लेने की घड़ी आ गई है!” फिर वो क्षमा को खींचकर लड़ाई लड़ने के लिए विवश करने लगे.

वयम और गमते दोनों गांवों के लोग, बड़ी मात्र में नदी के किनारे इकट्ठे हुए. वयम के लोगों ने करुणा को बंदी बना लिया. अब वहां हर इंसान के हाथ में पत्थर था.

क्षमा के हाथ में भी एक बड़ा पत्थर पकड़ाया गया. यह वही पत्थर था जिसे करुणा ने फेंका था.

“करुणा को पत्थर से मारो!” लोग चिल्लाये. “पत्थर को जोर से मारो!”

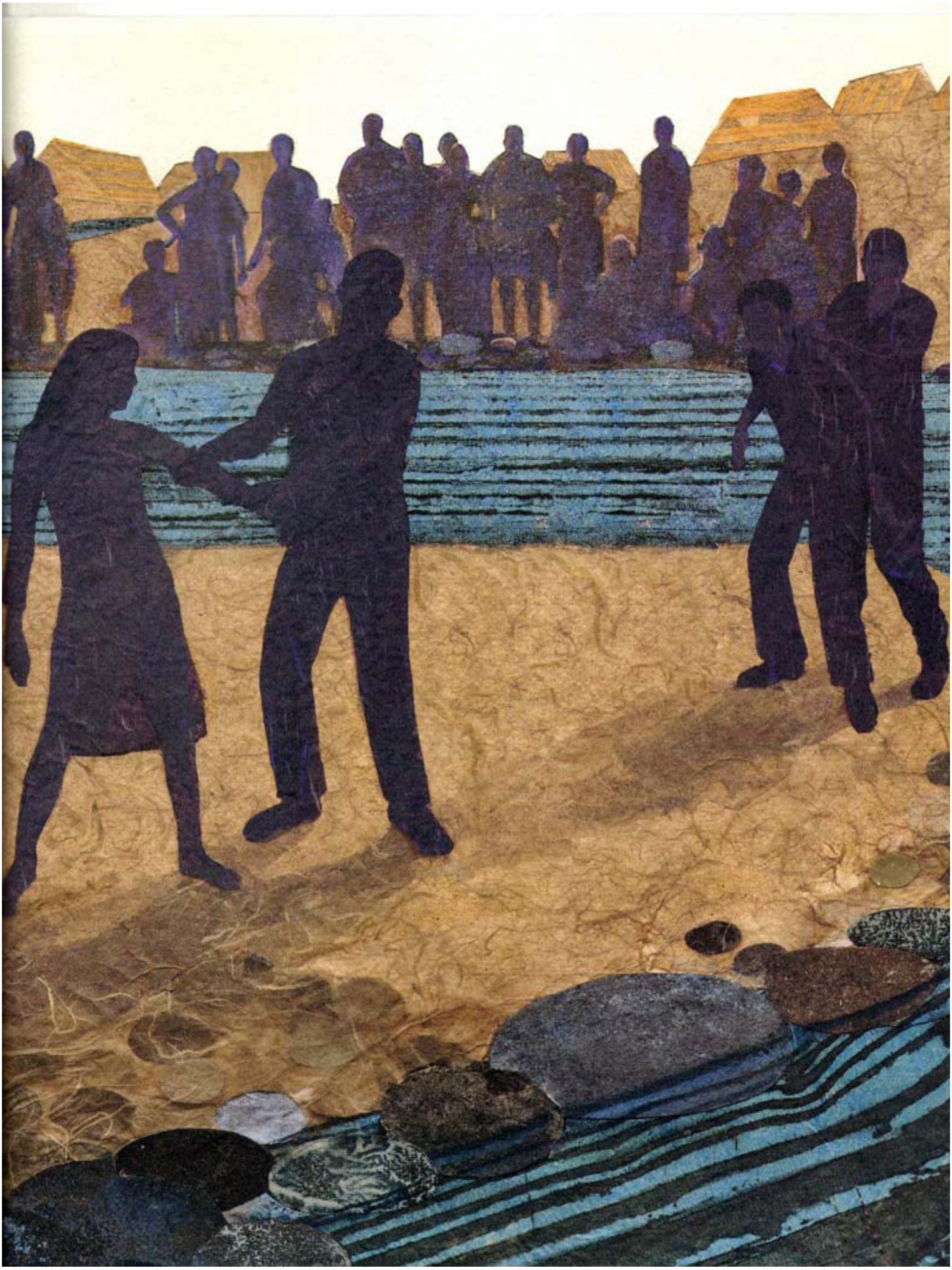

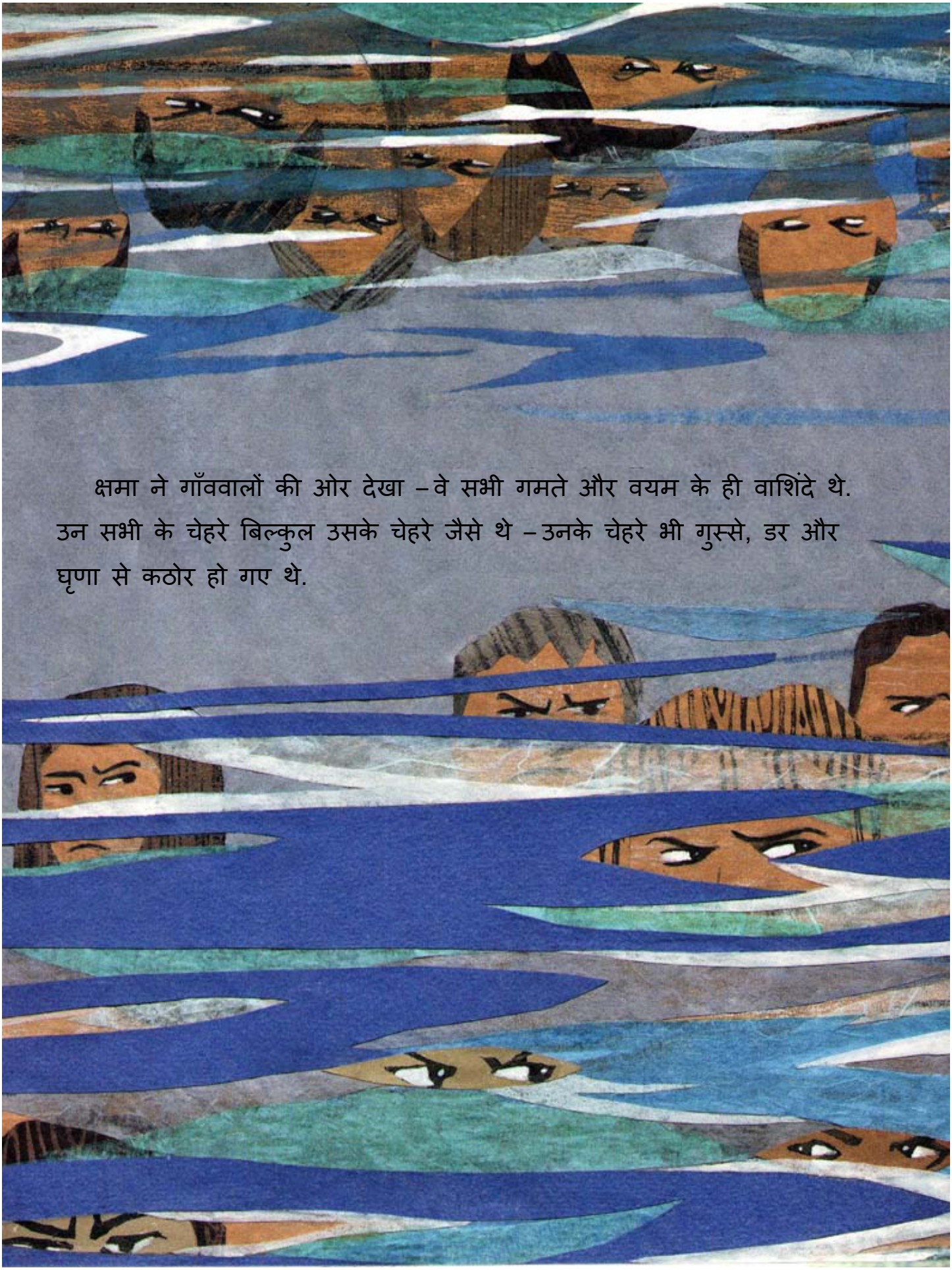

क्षमा ने गाँववालों की ओर देखा – वे सभी गमते और वयम के ही वाशिंदे थे. उन सभी के चेहरे बिल्कुल उसके चेहरे जैसे थे – उनके चेहरे भी गुस्से, डर और घृणा से कठोर हो गए थे.

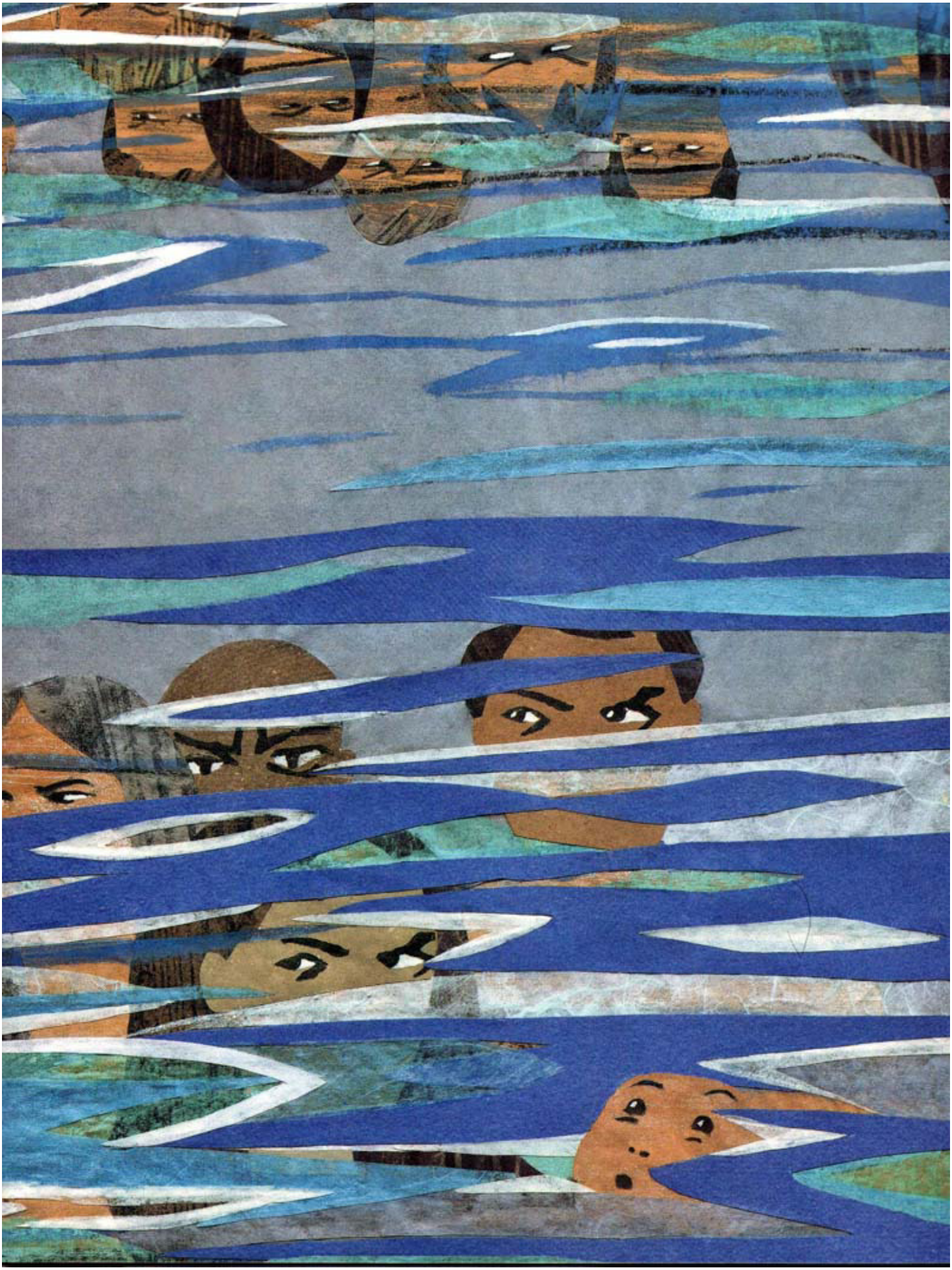

अचानक क्षमा को समझ में आया कि उसे क्या करना चाहिए. “नहीं!” उसने ज़ोरदार और स्पष्ट आवाज़ में कहा. “मैं करुणा को नहीं मारूंगी! उस लड़के को छोड़ दो!”

क्षमा के गांववाले बड़बड़ाए और बहुत खफा हुए. पर क्षमा अपनी बात पर अड़ी रही.

“अब लड़ाई को बंद करने का समय आ गया है,” उसने कहा. “हमें एक-दूसरे से नफरत करना और एक-दूसरे मारना अब बिल्कुल बंद करना चाहिए.” फिर क्षमा ने अपने हाथ के बड़े पत्थर को नीचे ज़मीन पर फेंक दिया.

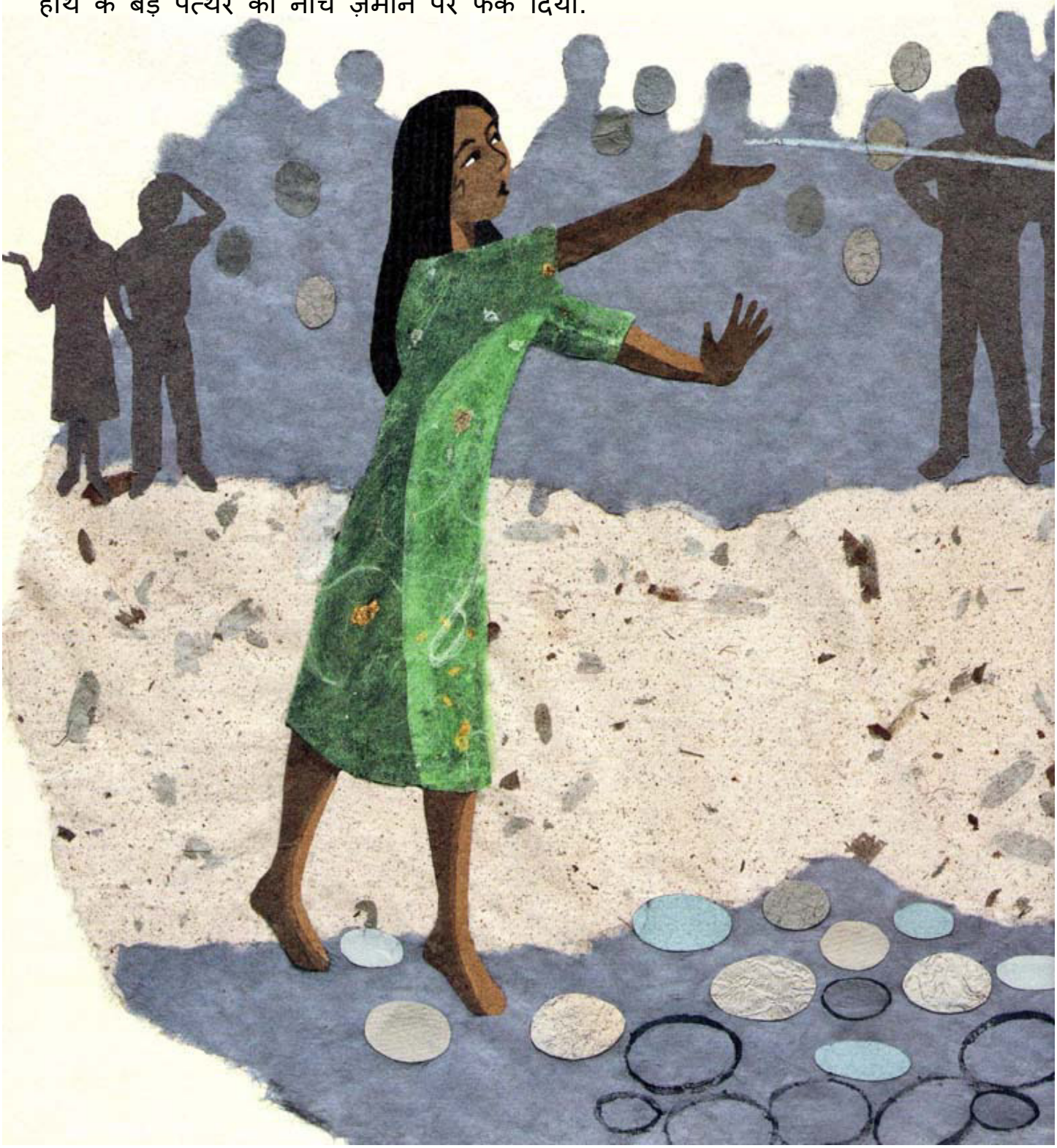

"लड़ाई की बजाए हमें यहाँ पर एक बाग़ बनाना चाहिए," क्षमा ने कहा.

फिर लोग अपना-अपना असंतोष प्रगट करने लगे. उनमें से एक चिल्लाया, "किस तरह का बगीचा?"

क्षमा ने इसका उत्तर पहले से ही सोच रखा था. "**क्षमा करने वाला बाग़**."

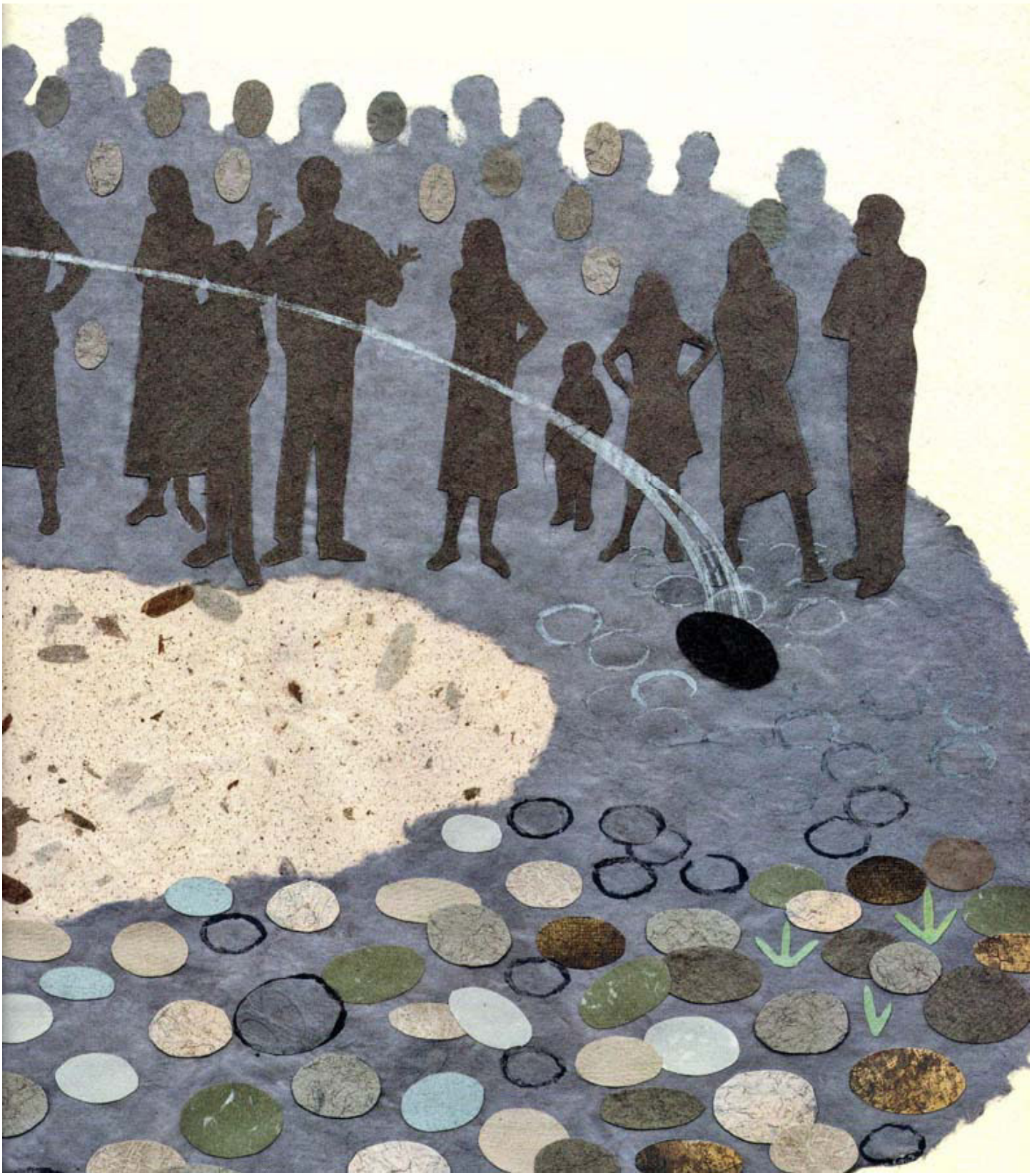

यह सुनकर बहुत से लोगों ने एक गहरी सांस ली, कुछ लोग गुस्सा भी हुए और खीजे भी. कुछ लोग हँसे भी. तभी वयम के कुछ लोगों ने कहा, “हाँ, अगर क्षमा यही चाहती है तो ....”

उन्होंने करुणा को छोड़ दिया. फिर सब लोगों ने, क्षमा के आसपास अपने हाथों के पत्थर डाल दिए.

गमते के कुछ लोगों ने इस दृश्य को देखा और कहा, “क्षमा का सुझाव वाकई अमल में लाने योग्य है ....” फिर उन्होंने भी अपने हाथों के पत्थर वहां डाल दिए.

इस बीच करुणा, डरी और गुस्से से भरी आँखों से यह सब देखता रहा.

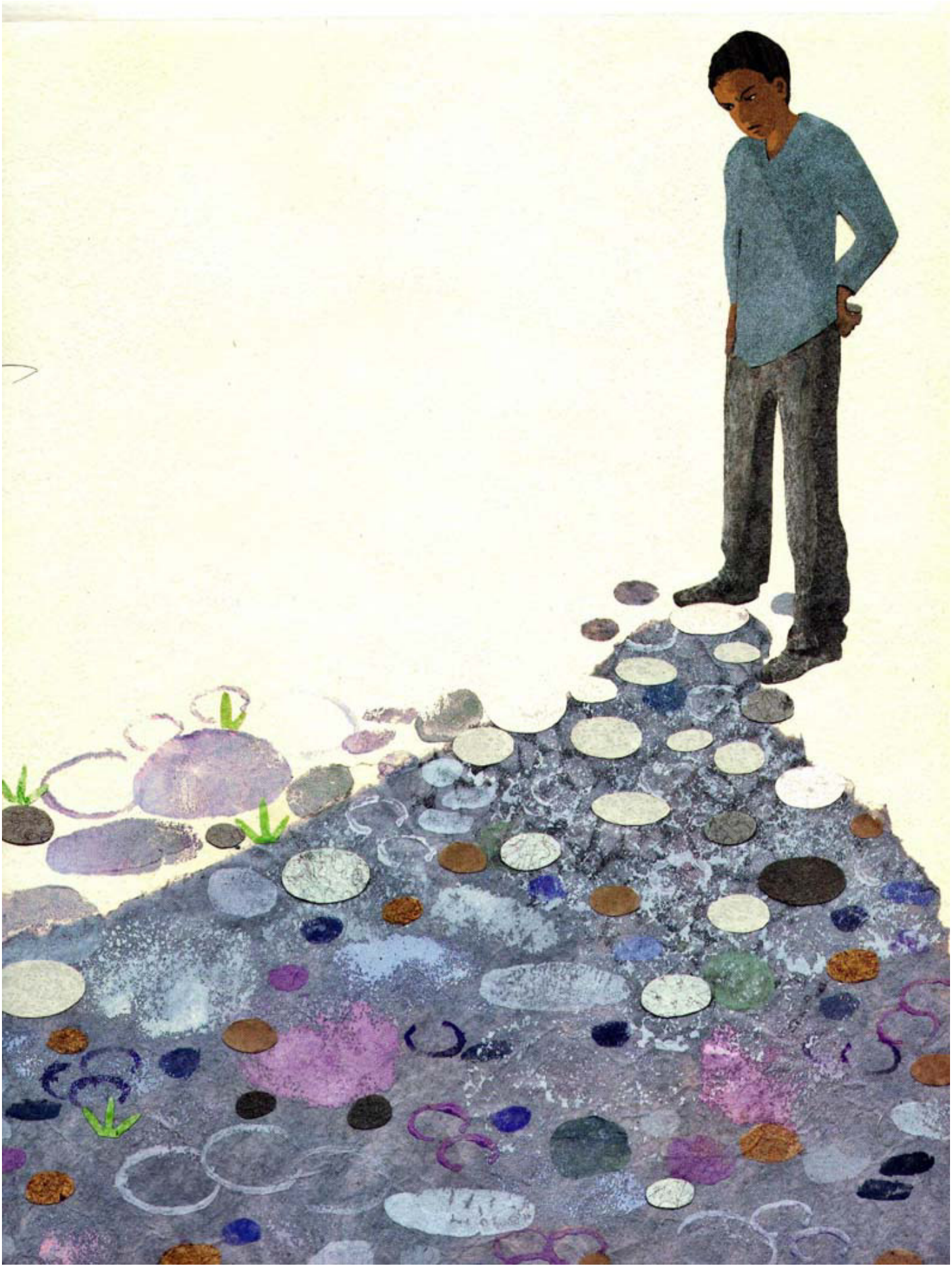

फिर एक-एक पत्थर को चुनकर, घाटी के लोगों ने मिलकर पहले तो बगीचे की दीवार बनाई. फिर भी उनके मन में तमाम प्रश्न थे.

“अगर हमने उन्हें माफ़ किया, तो क्या हम सभी पुरानी दुश्मनियों को भूल जाएँ?” वयम गाँव के लोगों ने पूछा.

क्षमा ने उत्तर दिया, “हम बगीचे में बैठकर इस बारे में चर्चा करके निर्णय लेंगे.”

“अगर हम माफ़ी मांगते हैं,” गमते गाँव के लोगों ने पूछा. “तो क्या वयम गाँव के लोग भी माफ़ी मांगेंगे?”

क्षमा ने उत्तर दिया, “बगीचा, सही निर्णय लेने में ज़रूर हमारी मदद करेगा.”

इस बीच करुणा सभी लोगों से अलग-थलग रहा. जो कुछ हो रहा था वो उसे बड़े ध्यान से देखता रहा और सोचता रहा.

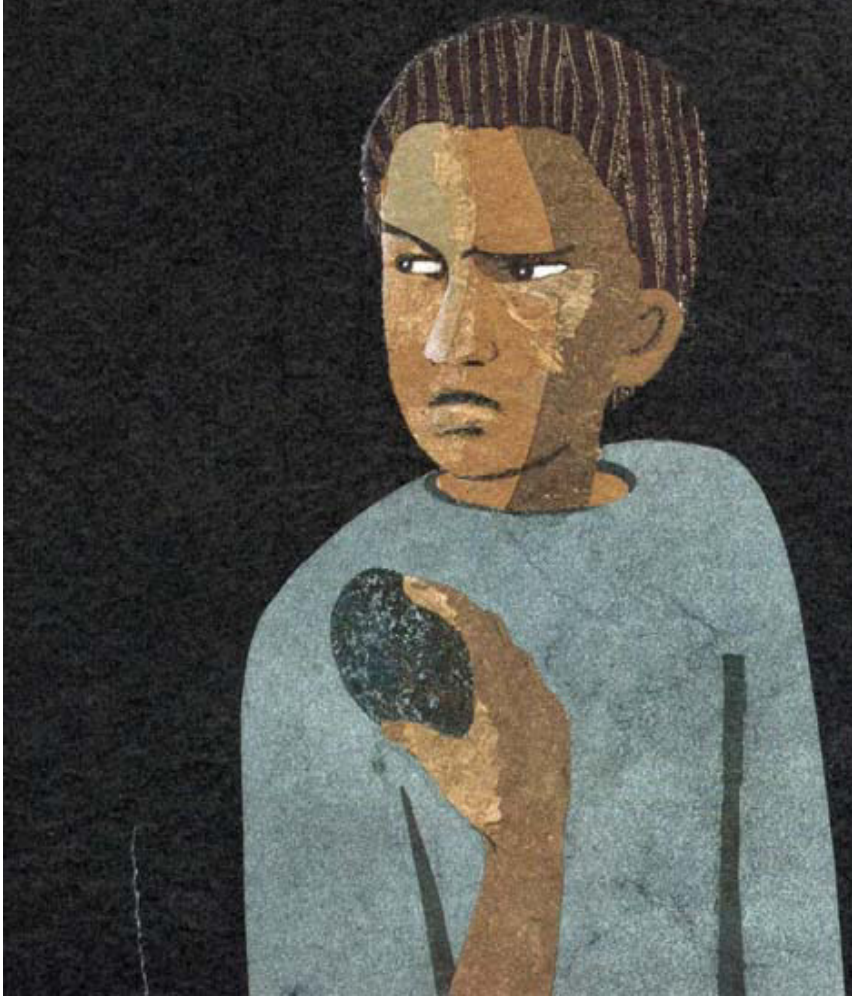

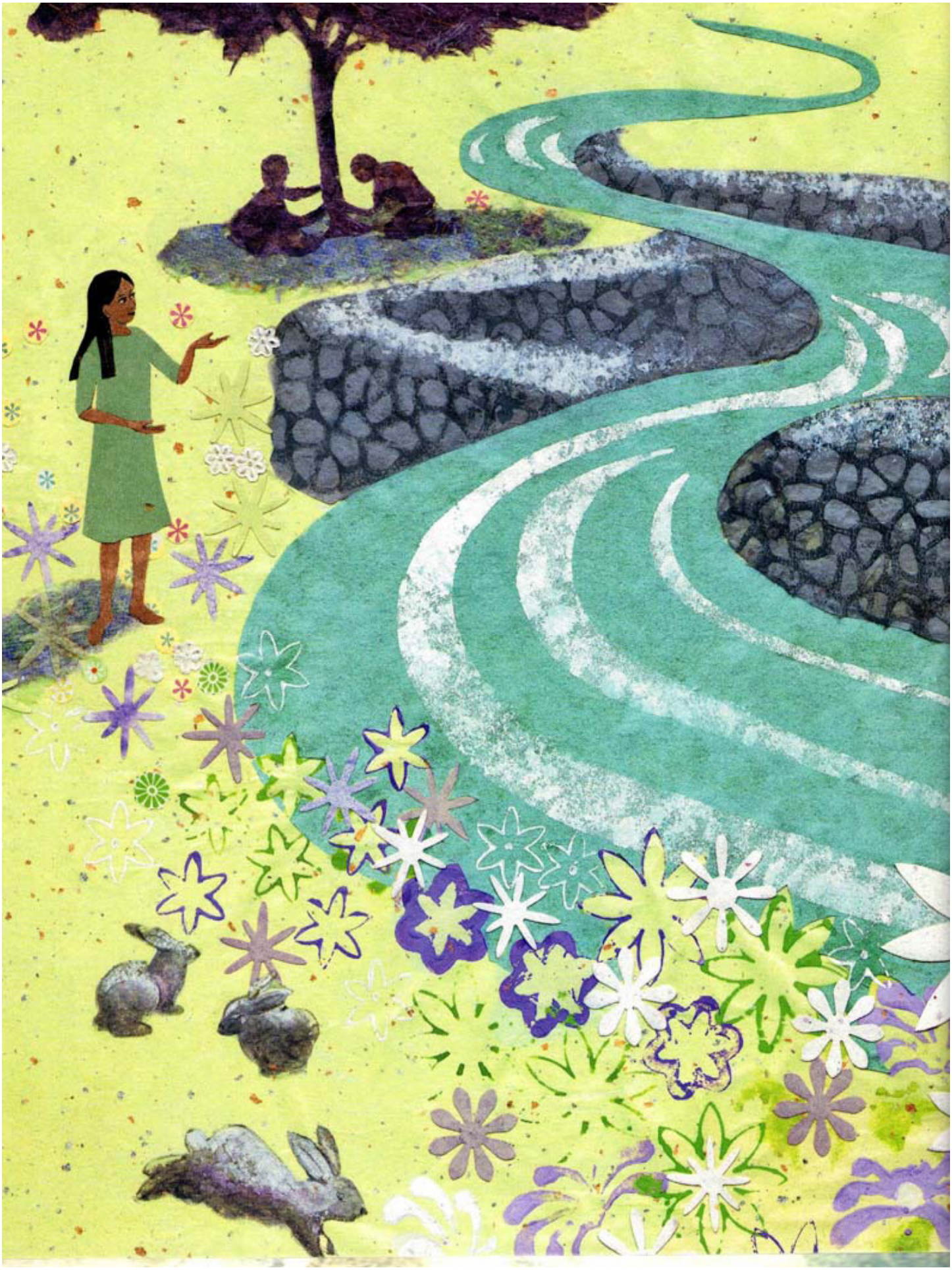

फिर दोनों गांवों के लोगों ने मिट्टी में, फूलों के बीज बोए और साथ में एक पेड़ भी लगाया. जब बाग़ का काम पूरा हुआ तो उसकी सुन्दरता देखकर हरेक के चेहरे पर ख़ुशी की मुस्कान फूट पड़ी.

"यह बाग़ हम सभी के लिए है," क्षमा ने कहा. "इस बगीचे में हम अपने दिलों की नफरत और घृणा को, हमेशा-हमेशा के लिए दफना सकते हैं. एक-दूसरे को माफ़ कर हम यहाँ आनंद महसूस कर सकते हैं. इस काम में आप में से कौन-कौन मेरी मदद करेगा?"

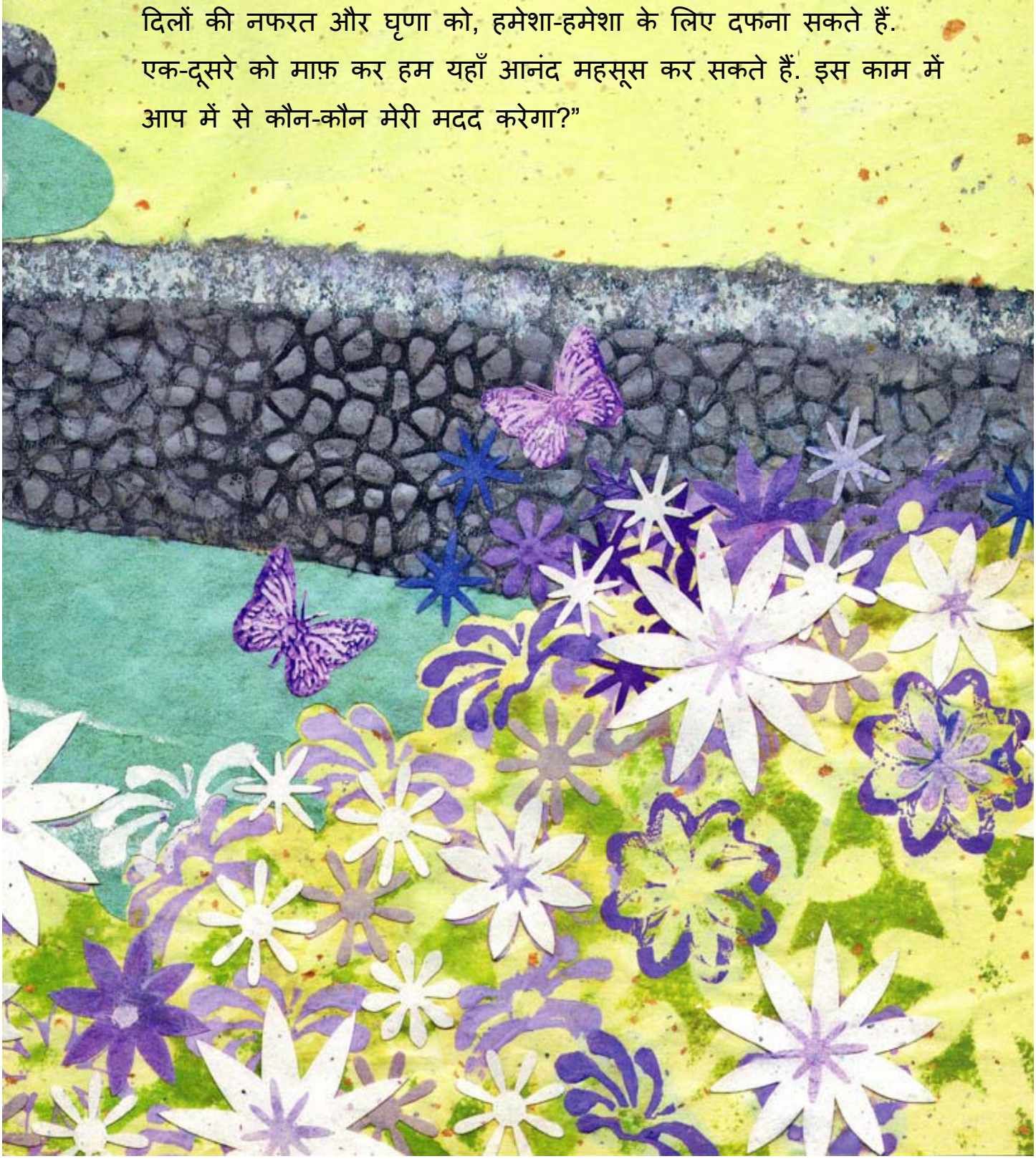

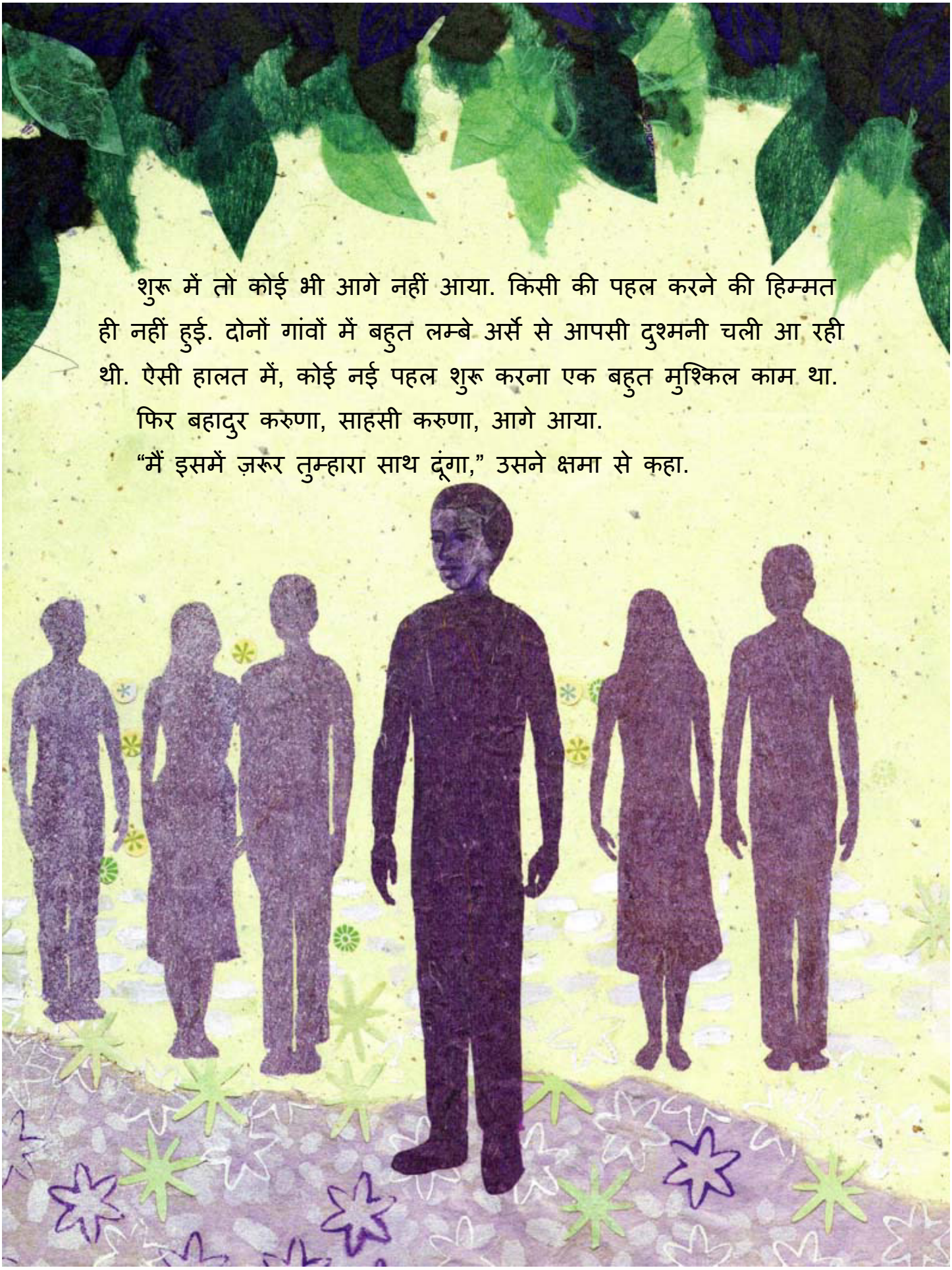

शुरू में तो कोई भी आगे नहीं आया. किसी की पहल करने की हिम्मत ही नहीं हुई. दोनों गांवों में बहुत लम्बे अर्से से आपसी दुश्मनी चली आ रही थी. ऐसी हालत में, कोई नई पहल शुरू करना एक बहुत मुश्किल काम था.

फिर बहादुर करुणा, साहसी करुणा, आगे आया.

“मैं इसमें ज़रूर तुम्हारा साथ दूंगा,” उसने क्षमा से कहा.

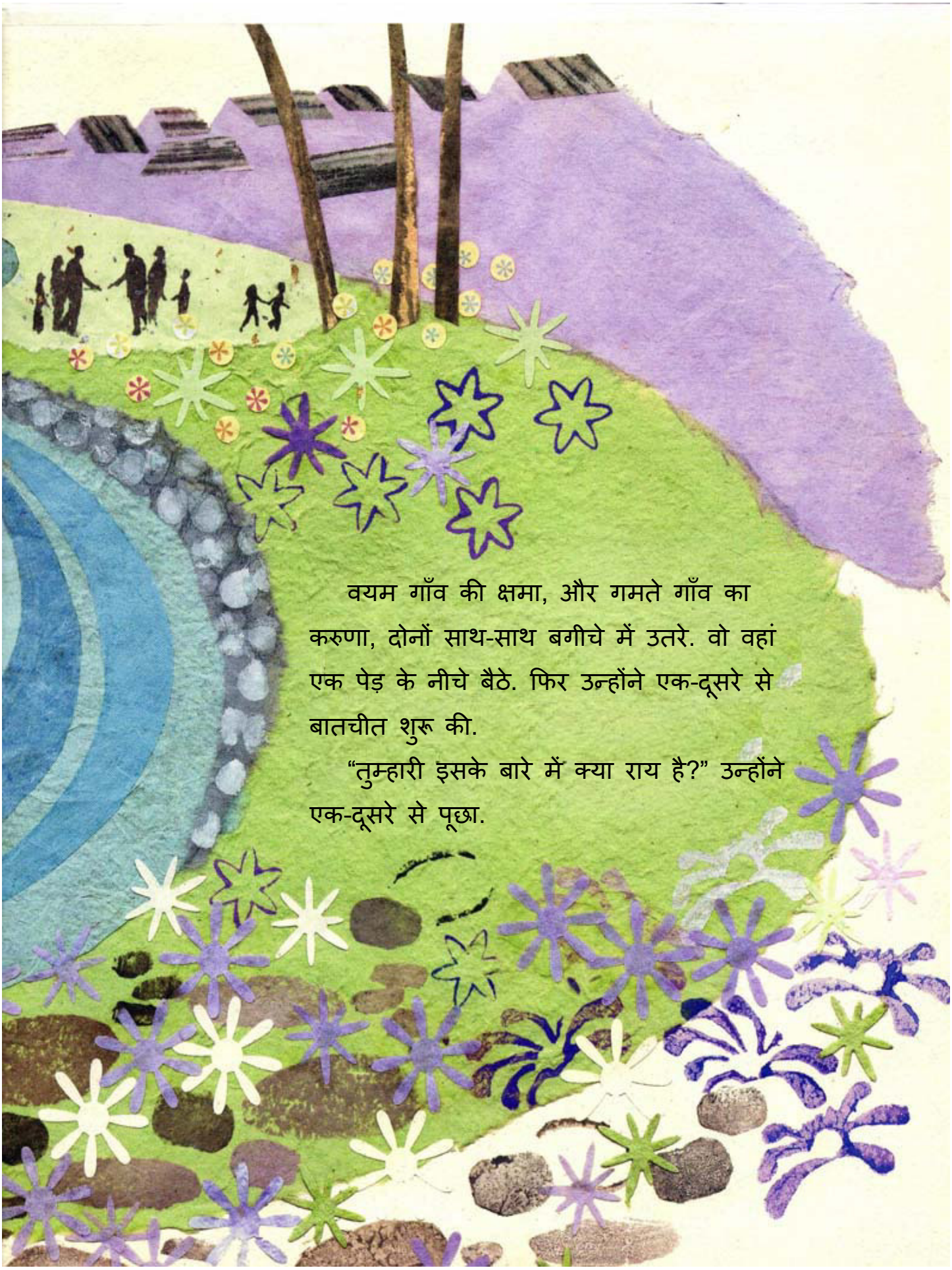

वयम गाँव की क्षमा, और गमते गाँव का करुणा, दोनों साथ-साथ बगीचे में उतरे. वो वहां एक पेड़ के नीचे बैठे. फिर उन्होंने एक-दूसरे से बातचीत शुरू की.

"तुम्हारी इसके बारे में क्या राय है?" उन्होंने एक-दूसरे से पूछा.

गार्डन ऑफ़ फोरगिवनेस फाउंडेशन

लेखक : रेवरेंड लिनडॉन हैरिस

गार्डन ऑफ़ फोरगिवनेस, बेरूत, लेबनान में स्थित है. यह बगीचा अलेक्सान्द्र अस्सिली की दूरदर्शिता का परिणाम है. अलेक्सान्द्र अस्सिली एक मानवीय सामजिक कार्यकर्ता और साइको-थेरापिस्ट थे. उनका मानना था: "कि बदले का हर कृत्य, भविष्य में फेंका हुआ एक टाइम-बम्ब है." उनकी यह मान्यता, लेबनान के गृह-युद्ध (1985-2000) में तीन लाख लोगों के शहीद होने के बाद पैदा हुई.

2005 में न्यूयॉर्क अमरीका में 9/11 का आतंकी हमला हुआ. उस हादसे के बाद मुझे गार्डन ऑफ़ फोरगिवनेस में जाकर शांति के लिए जैतून का एक पेड़ लगाने का सौभाग्य मिला. न्यूयॉर्क के ध्वस्त हुए मलबे पर खड़े होकर हमनें अलेक्सान्द्र अस्सिली की दूरदर्शिता को, अमरीका और दुनिया के हर कोने तक ले जानी की ठानी. आर्चबिशप डेस्मंड टूटू के अनुसार, "माफ़ी के अलावा, इंसानियत का कोई भविष्य नहीं है."

रेवरेंड लिनडॉन हैरिस के बारे में

रेवरेंड लिनडॉन हैरिस, सेंट पौल्स चर्च के पादरी थे. उनका चर्च, न्यूयॉर्क में, वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के बिल्कुल सामने था. रेवरेंड हैरिस ने आतंकी हमले के बाद अपने चर्च को, तुरंत एक बचाव और राहत-केंद्र में तब्दील कर दिया. उनके चर्च ने ज़ख़्मी और चोट लगे लोगों को सहारा दिया. वहां मृतकों के शरीर रखे गए. सेंट पौल्स चर्च ने राहत-कार्य में लगे लोगों को, पांच लाख से ज्यादा भोजन खिलाये. पूरे आठ महीने और पंद्रह दिनों तक चर्च, दिन-रात खुला रहा. हैरिस अब गार्डन ऑफ़ फोरगिवनेस के कार्यकारी निदेशक हैं.

गार्डन ऑफ़ फोरगिवनेस एक अलाभकारी अमरीकी संस्थान है, जो लोगों को "माफ़ी" की सीख सिखाने के लिए कटिबद्ध है. आप उनकी वेबसाइट से www.forgivetogive.org से गार्डन ऑफ़ फोरगिवनेस की किट डाउनलोड कर सकते हैं.